

विचार बिन्दु

संसार के दुःखियों में पहला दुःखी निर्धन है। उससे दुःखी वह है जिसे किसी का ऋण चुकाना हो। इन दोनों से अधिक दुःखी वह है, जो सदा रोगी रहता हो और सबसे दुःखी वह है, जिसकी पत्नी दुष्टा हो। -विदुरनीति

व्याधिक्षमत्व क्या है?

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। भगवान आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया:— भगवन्! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा, इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है। आत्रेय का उत्तर था:— अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे ऋतुओं का विपरीत होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुल्य हानि नहीं पहुँचा पाते। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि भवन्ति। च.सू.28.7)। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुँचा हुआ, शरीर के प्राणायतनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडोला शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियों भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि क्यों कुछ लोग प्रायः कभी बीमार नहीं पड़ते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें जीवन के अंतिम दिन तक लगभग सभी क्लिनिकल पैरामीटरों सामान्य बने रहते हैं। जैसा कि आपने पूर्व में पढ़ा, वस्तुतः इस चमत्कार के पीछे कोई चमत्कार नहीं बल्कि व्याधिक्षमत्व है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक व्याधिक्षमत्व सिद्धांत-प्रतिस्पल ऑफ़ इम्प्यूनिटी-के जनक माने जाते हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इंटेक्ट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मजबूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व।व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सज्ज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुरुस्त मांसेशियों, रसचाना, स्वरूप व मजबूत इंद्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, प्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सप्त अग्नि वाला, बुढ़ापे की उम्र में ही बुढ़ा होने वाला, मांसपेशियों के सही चयन वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18)। सममांसप्रमाणस्तुसमसहनोन्नरः। दृढेन्द्रियोविकाराणां न बलेनाभिभूयते।। क्षुत्पित्तपाशतपसहः शीतव्यायामसंभवे।। समवक्तासमचरः। सममांसचयोमतः।।

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्प्यूनिटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवच्छिन्न तत्वों के आक्रमण से बचने के लिये शरीर को सुरक्षा प्रदान करता है। किसी व्यक्ति में व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्प्यूनी-कॉम्प्रोमाइड्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगजनन आसानी से होता है। इम्प्यूनिटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एंटीबॉडी या खेतकत कोशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीवन-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधिक्षमत्व है। अभिप्राय यह है कि शरीर में उत्पन्न बीमारी केवल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्यात्पादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आधारित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है।

शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्व को ओज और ओज को बल के रूप में भी समझा जाता है (सु.सू.15.19) रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत् परं तेजस्तत् खल्वोत्तरेद्वे बलमिद्युच्यतेस्व शास्त्रसिद्धान्तात्। रसादिक तथा शुक्रान्त धातुओं के उत्कृष्ट स्वरूप को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर की रक्षा करता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है ओज और बल हालाँकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज को कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से इन्द्र्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल व्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.117)। प्राकृतस्तुबलं प्रकृते मल उत्पत्त्येस चैवौजः स्मृतःकाये स च पापोपस्थिते।। यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्यम बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अवर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को दर्शाविधि रोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदहारण के लिये व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक् प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल का मुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं की रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में सत्य, सत्त्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय है। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से परखा जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार की मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति की आहार शक्ति मजबूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथाचित होने से शरीर मजबूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्व का रोगों से बचाव और उपचार में अनिवार्यता को देखते हुये यह प्रश्न स्वाभाविक है कि व्याधिक्षमत्व को बढ़ाने के लिये कौन सी युक्ति का क्रियान्वयन किया जाये? व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिपूर्वक नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं व मलक्रिया का समत्व तथा आत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। यह विषय इतना विस्तृत है कि पूरा आयुर्वेद इसमें समाहित है। तथापि संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये सात रक्षा-दीवारों की निरंतर और सम्यक् सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें (1) आहार या खानपान, (2) विहार या जीवनशैली, (3) स्वस्थवृत्त या व्यक्तित्व स्वास्थ्य विषयक क्रियायें, (4) सद्बत या व्यक्तित्व सदाचरण, (5) पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, (6) रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने लिये कायाकल्प उपाय, और अंततः (7) औषधि या चिकित्सा शामिल है।

—अतिथि सम्पादक,

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,

(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)



डॉ. सुबोध अग्रवाल

प्रवासी राजस्थानी दिवस का आयोजन देश-दुनिया में बसे राजस्थानियों के जड़ों से जुड़ाव का बेहतरान अवसर है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रति वर्ष प्रवासी राजस्थानी दिवस आयोजित करने का निर्णय इस मायने में महत्वपूर्ण हो जाता है कि राजस्थानियों को देश-दुनिया में सक्रिय और सकारात्मक भूमिका निभाते हुए देखा जा सकता है। 10 दिसंबर को जयपुर में आयोजित प्रवासी राजस्थानी दिवस का आयोजन इसलिये भी अर्थवत्त हो जाता है कि राजस्थानियों या यों कहें कि मारवाड़ियों की देश दुनिया में आज ही नहीं अपितु सदियों से विशिष्ट पहचान रही है।

दूसरा यह कि प्रवासी राजस्थानियों की एक खस बात यह है कि उनका अपनी जन्मभूमि के प्रति लगाव हमेशा से ही रहा है। साल में एक बार परिवार के साथ वे अपने पारिवारिक देवताओं को ढोकने अवश्य आते हैं तो अपने गांव-गाणों के लिए कुछ करने के लिए हमेशा तत्पर रहते आये हैं। पिलानी का तकनीकी संस्थान इसका जीता-जागता उदाहरण है।

शिक्षण संस्थान, चिकित्सालय, धर्मशालाएँ और इसी तरह के विकास कार्यों में अपने पूर्वजों के नाम पर कुछ

ना कुछ करने की भावना प्रवासी राजस्थानियों में सदियों से रही है। इससे एक बात साफ हो जानी चाहिए कि राजस्थानियों ने अपनी या अपने पूर्वजों की जन्मभूमि से हमेशा से जुड़ाव बनाये रखा है। श्रेष्ठानियों के गाँवों में इसे आसानी से देखा जा सकता है। अब बदलाव इस मायने में देखा जाना चाहिए कि प्रवासी राजस्थानियों को अपनी जन्मभूमि में भी उद्योग स्थापित करने का आमंत्रण दिया जा रहा है।

राजस्थान में औद्योगिक निवेश से अपने प्रदेश के आर्थिक विकास में भागीदार बनने के साथ ही रोजगार, कौशल विकास और इसी तरह की अन्य आर्थिक-सामाजिक सहभागिता बढ़ने से पीछियों पहले राजस्थान से बाहर गए प्रवासियों को राजस्थान में ही औद्योगिक निवेश का बेहतर अवसर उपलब्ध हो पा रहा है। आज देश दुनिया के लोग यहां तक कि जापानी जोन में जापान के निवेशक सफलतापूर्वक उद्योगों का संचालन कर रहे हैं तो प्रवासी राजस्थानियों को तो राजस्थान से जुड़ने का इससे बेहतर अवसर और क्या हो सकता है। राज्य सरकार ने औद्योगिक निवेश को लेकर नई उद्योग नीति, राजस्थान निवेश नीति सहित अनेक नीतियां जारी कर निवेशकोन्मुखी माहौल तैयार किया है। यह इसी से समझा जा सकता है कि राजिंज राजस्थान दिसंबर 2024 में आयोजित किया गया तो उसमें 30 लाख करोड़ से अधिक निवेश प्रस्ताव हस्ताक्षरित हुए और अब तेजी से ग्राउण्ड ब्रेकिंग हो रही है।

कुछ जड़ों कभी खत्म नहीं होती- वे बस अपने लोगों का घर लौटने के बहाने का इंतजार करती हैं। चाहे वे अपने जन्म के रोगिस्तानी गाँवों में रहते हों या राजस्थान की भावना को देश के अन्य प्रदेशों या दूर देशों में ले गए हों। राजस्थान की कहानी लिखने में सदियों से ही प्रवासी राजस्थानियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 10 दिसंबर को

जयपुर में प्रवासी राजस्थानी दिवस मनाया उस बड़े परिवार से जुड़ने का अवसर है जिसने बिना किसी आहट के राजस्थान के विकास को शक्ति दी है - उसका डायस्पोरा।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में, यह भावनात्मक बंधन अब एक रचनात्मक आंदोलन में बदल गया है। देश-विदेश में होने वाले रोड शो के माध्यम से संदेश साफ दिया गया है कि दुनिया में कहीं भी रहने वाला हर राजस्थानी, राजस्थान का है। आज, राजस्थान ने धरेलू और वैश्विक दोनों डायस्पोरा को समान सम्मान देकर, उन्हें राज्य के विकास में भागीदार बनाने के सार्थक और सकारात्मक प्रयास होने जा रहे हैं।

यह सिर्फ एक आउटरीच प्रयास से कहीं ज्यादा है। यह उद्देश्य की धर पा रही है। कई लोग जो कभी अवसरों की तलाश में राजस्थान छोड़कर गए थे, अब अवसर पैदा करने के लिए वापस लौटना चाहते हैं। वे विचार, निवेश, नवाचार और गौरव लाते हैं - एक शक्तिशाली मिश्रण जो समुदायों को बदल सकता है। अगर यह भावना मजबूत होती है, तो 10 दिसंबर को एक दिन उस पल के रूप में याद किया जा सकता है जब राजस्थान की वैश्विक पहचान फिर से पूरी हो गई। क्योंकि कुछ यात्राएँ वहीं खत्म नहीं होतीं जहाँ से वे शुरू होती हैं - वे और भी समृद्ध होकर वापसी करती हैं।

शासन की यह भावना - नीति। लोग। प्रगति - सभी क्षेत्रों में दिखाई देती है। इसका एक शक्तिशाली उदाहरण राजस्थान की उँट विरासत का पुनरुद्धार है। 11 साल बाद, राज्य ने उँटों के अंतर-राज्य परिवहन पर से प्रतिबंध हटा दिया है, यह कदम ठीक समय पर उठाया गया क्योंकि 1992 में उँटों की आबादी 7.5 लाख से घटकर आज लगभग 1 लाख रह गई है। जिसका मकसद सुरक्षा था, उसने लगभग व्यापार को खत्म कर दिया, कीमतें गिरा

दीं, और पालने वालों को आजीविका की श्रृंखला तोड़ दी। उँट, हमारा राज्य पशु, सिर्फ गौरव का प्रतीक नहीं है - यह लचीलेपन, रोगिस्तानी संस्कृति और पुष्कर की आत्मा का प्रतीक है। बँटने हटाने से, सरकार ने पारंपरिक बाजारों को फिर से जिंदा करने, उँट पर आधारित टूरिज्म को बढ़ावा देने और उँटनी के दूध जैसे डेयरी इन्वोल्वमेंट को सपोर्ट करने का रास्ता खोल दिया है, जिसकी कीमत अब 80-100 प्रति लीटर है और यह ग्लोबल मार्केट में भी पहुँच रहा है।

राजस्थान का सबसे महशूर मेला, पुष्कर, बस कुछ ही हफ्ते दूर है। इसके शानदार रेत के टीले, लोक गीत और खूबसूरती से सजे उँटों ने हमेशा दुनिया को मोहित किया है। फिर भी, हाल के सालों में घोड़ों की संख्या उँटों से ज्यादा हो गई है - जो रोगिस्तानी की विरासत के इस उत्सव के लिए एक चिंताजनक संकेत है। इसे फिर से जिंदा करने के लिए सिर्फ पॉलिसी बदलने से ज्यादा कुछ करना होगा - सस्टेनेबल मार्केट, राइका और रेग्यारी चरवाहों का वेलफेयर, और उँट उत्पादों और कल्चरल टूरिज्म को ज्यादा बढ़ावा देना होगा। सोच-समझकर उठाए गए कदमों से, पुष्कर आने वाली पीढ़ियों के लिए सिर्फ पॉलिसी बदलने से ज्यादा यादगार बना रहे सकता है।

यही बदलाव राजस्थान के पश्चिमी रोगिस्तानी में भी दिख रहा है। जिन जगहों को कभी बंजर माना जाता था, वे आज भारत की कृषि सफलता में भरपूर योगदान दे रही हैं। जैरा अब 5.5 लाख हेक्टेयर से ज्यादा भूमि पर उगाया जा रहा है, जिससे राजस्थान भारत के कुल उत्पादन का लगभग आधा हिस्सा पैदा करता है। अनाज, जिसकी रोगिस्तानी मिट्टी में खेती करना कभी सोचा भी नहीं जा सकता था, वह अब सालाना 1.6 लाख टन की सफलता की कहानी बन गया है, जिससे बाड़मेर के 8,000 से ज्यादा हेक्टेयर जमीन हरे-भरे बागों में बदल गई है। इसबगोल (इसबगोल की

पूसी) धीरे-धीरे एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मांग वाली फसल बन गई है क्योंकि यह खारे हालात में भी अच्छी तरह उग सकती है। और शायद इन सब में सबसे ज्यादा प्रेरणादायक है - जैतून की खेती, जिसे ग्लोबल पारंपरिक के साथ शुरू किया गया था, अब 5,000 से ज्यादा हेक्टेयर के विजन की ओर बढ़ रही है और इन्फे भारत का पहला धरेलू जैतून का तेल भी बनाया है।

इन कहानियों को जो चीज एक साथ जोड़ती है, वह सिर्फ तरक्की नहीं, बल्कि गर्व है। यह विश्वास है कि राजस्थान अपनी विरासत की रक्षा करते हुए अपने भविष्य को आकार दे सकता है। यह भरोसा है कि जब किसान और सरकार इन्वोल्वमेंट और सपोर्ट के साथ एक साथ खड़े होते हैं तो रोगिस्तानी भी खिल सकते हैं। और यह पक्का यकीन है कि राजस्थान के लोग, चाहे वे कितनी भी दूर चले जाएँ, हमेशा इसकी आगे की यात्रा का हिस्सा बने रहेंगे।

जब हम 10 दिसंबर को अपने डायस्पोरा का स्वागत करने के लिए अपनी बाहें खोलते हैं, तो हम उन्हें सिर्फ जश्न मनाने के लिए नहीं बुला रहे हैं -

हम उन्हें कल के राजस्थान को मिलकर बनाने के लिए बुला रहे हैं। एक ऐसा राजस्थान जो अपने अतीत का सम्मान करता है, अपने वर्तमान का निर्माण करता है, और अपने ग्लोबल परिवार की ताकत से अपने भविष्य के अपने देखता है। क्योंकि राजस्थान सिर्फ एक भौगोलिक स्थान नहीं है - यह एक जुड़ाव है। एक ऐसा रिश्ता जो दिलों में रहता है, यदों में बसता है और तरक्की बनकर धर लौटता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की यह सकारात्मक पहल निश्चित रूप से राजस्थान के विकास में प्रवासी राजस्थानियों की सहभागिता बढ़ाने में सहायक है।

—डॉ. सुबोध अग्रवाल,

(आईएएस)

अतिरिक्त मुख्य सचिव,

राजस्थान सरकार

सांभर की पुरानी बसावट का 103 साल पुराना रिकॉर्ड आठ साल से गायब

इस रिकॉर्ड ने तत्कालीन बसावट के मानचित्र तक मौजूद है, इसे "1940 से पूर्व संधारित खसरा मौजा आबादी रजिस्टर" बोला जाता था

सांभरझील, (निर्स)। सांभर नगर पालिका में ब्रिटिशकाल का करीब 103 साल पुराना महत्वपूर्ण रिकॉर्ड करीब आठ साल से गायब है। इस रिकॉर्ड में तत्कालीन बसावट के मानचित्र तक मौजूद हैं। मकानों की पूरी नापचौक तो दर्ज है ही, साथ ही इस रिकॉर्ड को खंगलने पर पता चल

■ इसमें मकानों की पूरी नापचौक तो दर्ज है ही, साथ ही इस रिकॉर्ड को खंगलने पर पता चल सकता है कि किसकी चबूतरी कितनी है

■ वर्ष 2018 के बाद से बताया जा रहा है कि अब यह रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है, कहां गायब हो गया है या जानबूझकर उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है

सकता है कि किसकी चबूतरी कितनी है यानी एक-एक इंच तक का हिसाब तत्कालीन बसावट के समय का



सांभर पालिका के पुराने भवन पर ताले लटके होने से पुराने रिकॉर्ड की सार-संभाल नहीं की जा रही है।

अंकित है, जिसमें रिकॉर्ड दर्ज है उसे "1940 से पूर्व संधारित खसरा मौजा आबादी रजिस्टर" बोला जाता था। सांभर की एक शक्तिशाली और से वर्ष 2014 में इसका प्रमाणित रिकॉर्ड लिया गया था। वर्ष 2018 के बाद से बताया जा रहा है कि अब यह रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। कहां गायब हो गया है या जानबूझकर उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है। नकल प्राप्तकर्ता की ओर से इस महत्वपूर्ण रिकॉर्ड को लेकर

चिंता तो जाहिर की है साथ ही अंदेशा भी जताया है कि कहीं उसे तानाशाही पूर्ण पूर्ण तरीके से डेस्ट्रॉय नहीं कर दिया जाए। यदि इस रिकॉर्ड को गायब कर दिया गया तो पुरानी बसावट में बसी आबादी के बाशिंदों को पता ही नहीं चलेगा कि वह उसकी वास्तविक सीमा कहां तक है। इससे भविष्य में ऐसे लोगों को कई कानूनी प्रक्रियाओं से जुझना पड़ सकता है। बताया जा रहा है कि वर्ष 1922 से ब्रिटिश गवर्नमेंट

के समय सांभर म्युनिसिपालिटी का पहला चैयरमैन बना था। यहां पर सांभर शामलात म्युनिसिपालिटी एक्ट 1947 उस समय प्रभावी था। नगर पालिका का पुराना भवन जिस पर अभी ताले लटके हैं तथा नई बिल्डिंग में शिफ्ट होने के बाद से इसे वीरान छोड़ दिया गया है। इस पुरानी बिल्डिंग में आजादी से पहले का महत्वपूर्ण रिकॉर्ड है, जिसकी कोई सार-संभाल व देखरेख नहीं की जा रही है।

राशिफल रिवार 7 दिसम्बर, 2025

पौष मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2082, पुनर्वसु नक्षत्र रात्रि 4:12 तक, शुक्ल योग रात्रि 8:07 तक, वणिज करण प्रातः 7:55 तक, चन्द्रमा रात्रि 10:38 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 4:12 से सूर्योदय तक है। सर्वाथ सिद्धि योग रात्रि 4:12 से आरम्भ होगा। भद्रा प्रातः 7:55 से रात्रि 6:25 तक रहेगी। आज मंगल धनु राशि में रात्रि 8:17 पर प्रवेश करेगा। आज चतुर्थी व्रत, सौभाग्य सुंदरी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:25 से 9:43 तक, लाभ-अमृत 9:43 से 12:18 तक, शुभ 1:36 से 2:54 तक। राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:07, सूर्यास्त 5:29 तक

मेघ	सिंह	धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से संपर्क हो सकता है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।	आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य सुगमता से बनने लगे। परिवार में मनोरंजन का माहौल रहेगा।	परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।
वृष	कन्या	मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगे। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।	आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। आज विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है।
मिथुन	तुला	कुंभ
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।	आज महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।	आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।
कर्क	वृश्चिक	मीन
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज अनर्गल कार्यों में समय खर्च हो सकता है। मन में अंतोशय बना रहेगा।	अपनी कार्य योजना को सीमित करें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ-मांगलिक कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।	घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सीकर में पारा 1.2 डिग्री दर्ज

सीकर, (निर्स)। शेखावाटी इलाके में कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी है। प्रदेश में सबसे ठंडा इलाका फिलहाल शेखावाटी है। सीकर में शुनिवार सुबह न्यूनतम तापमान 1.2 डिग्री दर्ज किया गया था। आगामी 3 दिन तक सर्दी का यही क्रम बना रहेगा। फसलों पर बर्फ नबने लगी है, जिससे किसान सुबह-सुबह टचयुवेल से पानी के फव्वारे छिड़ककर फसलों को बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

जानकारी के अनुसार सीकर सहित पूरे शेखावाटी इलाके में न्यूनतम तापमान

■ आगामी तीन दिन तक सर्दी का यही क्रम बना रहेगा, फसलों पर बर्फ जमने लगी

लगातार नीचे जा रहा है। पिछले 36 घंटों से सीकर में तापमान जमाव बिंदु के करीब ही टिका हुआ है। फतेहपुर के कृषि अनुसंधान केंद्र में आज सुबह 1.2 डिग्री तापमान दर्ज किया गया। शुक्रवार को यह 1 डिग्री न्यूनतम और 24.5 डिग्री अधिकतम रहा। पिछले 5 दिन से सीकर में लगातार तेज सर्दी बनी हुई है। मौसम साफ होने की वजह से सार दिन पहले हुई मावट के बाद सर्दी और तेज हो गई है। गांवों में लोग लॉट से कांप रहे हैं। मौसम विभाग ने फिलहाल शीतलहर का कोई अलर्ट जारी नहीं किया है। बीती रात ठंडी हवाओं ने टिड्डुरन बढ़ाई और दिन में भी सर्दी का असर महसूस हुआ। विभाग के मुताबिक, सीकर में अगले एक हफ्ते तक सूखी और कड़ाके की सर्दी रहेगी। तीन दिन बाद मौसम में कुछ बदलाव आ सकता है। वहीं, प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में अगला एक हफ्ता मौसम शुष्क रहेगा।